Sem VI
दर्शनशास्त्र (Core XV)
Contemporary western philosophy
समकालीन पाश्चात्य दर्शन

Kumar Madhusudan Raja
Deptt of Philosophy
Adarsh college Rajdhanwar

* हेगल का द्वन्द्व न्याय Hegel's Dialectical method

ऐतिहासिक दृष्टि से 'द्वन्द्व न्याय' (Dialectic) सिद्धान्ततः विवादस्पद विषयों पर वाद-विवाद, बहस और परिचर्चा करने का एक विनम्र तरीका है। "हेगल के दर्शन में विचार की अमूर्त तथा अपूर्ण अवस्थाओं से मूर्त एवम् अधिक पूर्ण अवस्थाओं की ओर विकास (संक्रमण) को द्वन्द्व-न्याय कहा जाता है। यह संभूति की प्रक्रिया है जो पक्ष, विपक्ष और समन्वय के रूप में तब तक चलती रहती है, जब तक कि पूर्णता की अवस्था न प्राप्त हो जाय।" अपूर्णताओं का निराकरण द्वन्द्व-न्याय के द्वारा ही हो सकता है। इस क्रिया में सत् (Being) सारतत्व (Essence) और 'अन्तर्बोध (Notion), ये तीनों अवस्थाएँ क्रमशः उच्च, उच्चतर और उच्चतम स्थितियों को प्राप्त करके निरपेक्ष तत्व के समन्वयक स्वरूप में अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर लेती हैं।

हेगल ने विरोध की व्याख्या परंपरागत तर्कशास्त्र में प्रचलित 'व्याघात' (Contradiction) से भिन्न अर्थ में किया है। हेगल के अनुसार आत्यन्तिक विरोध का वास्तविक जीवन से कोई संबंध नहीं है। व्याघात केवल तर्कशास्त्रियों को बौद्धिक क्रीडा का विषय मात्र है। हेगल के दर्शन में भेद का अर्थ है विरोध, जो सदैव समन्वय अथवा अभेद पर आधारित होता है। भेद या विरोध के द्वारा ही हेगल ज्ञान (चित्) और सत्ता (सत्) में पूर्ण सामंजस्य स्थापित करने के लिए चेतना के उच्च स्तरों की खोज करने का प्रयास करता है। उनके अनुसार निरपेक्ष प्रत्यय के विकास के लिए अभेद (Identity) की अपेक्षा विरोध (difference) अधिक महत्वपूर्ण होता है।

हेगल का दावा है कि प्रत्येक वर्गीय तत्व में हमेशा ही परस्पर विरोधी गुण उपस्थित होते हैं। यहाँ पर हेगल प्राचीन ग्रीक दार्शनिक एम्पीडोक्लीज के "प्रेम" एवम् "घृणा" अथवा 'सामंजस्य' एवम् 'संघर्ष' के सिद्धान्त से प्रभावित प्रतीत होता है।

Scanned with CamScanner

हेगल के दर्शन में विकास भेद से विशिष्ट अभेद की ओर होता है। वह व्याघात-नियम के साथ-साथ तर्कशास्त्र के 'मध्यम परिहार-नियम' (Law of Excluded middle) का भी निराकरण करता है। इस नियम के अनुसार प्रत्येक वस्तु या तो सत् है या असत् है। हेगल के अनुसार यह नियम भी व्याघात-नियम का ही एक परिवर्तित रूप है। हेगल ने परम्परागत आकारिक तर्कशास्त्र के अभेद-नियम, व्याघात-नियम और मध्यम परिहार-नियम का निषेध करके अपने दर्शन में 'मूर्त निषेध' (विरोध) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। 'मूर्त निषेध' की अवधारणा हेगलीय द्वन्द्व-न्याय का मेरूदण्ड है।

हेगल निषेध के महत्व पर बल देते हुए कहते हैं- 'प्रत्येक निषेध निश्चीकरण है' (Every Negation is Determination)। इसी प्रकार स्पिनोजा ने भी कहा था कि 'प्रत्येक विशेषीकरण निषेधीकरण है' (Every determination is negation)। अतः निषेध स्वीकरण पर आधारित होता है।

निरपेक्ष प्रत्यय के विकास की प्रक्रिया 'त्रिक नियम' (Triadic Law) पर आधारित है। त्रिक नियम हेगलीय द्वन्द्व न्याय का अभिन्न अंग है। इसके अंतर्गत पक्ष (Thesis), विपक्ष (Anti-Thesis) और समन्वय (Synthesis), द्वन्द्व-न्याय के ये तीनों पहलू सम्मिलित हैं। समन्वय के अंतर्गत पक्ष और विपक्ष सामञ्जस्यपूर्ण रूप में स्थित हो जाते हैं, और उनका विरोधी स्वभाव समन्वयात्मक रूप में विलयित हो जाता है। इसी कारण हेगल ने अपनी प्रथम श्रेणी के अंतर्गत तीसरी अवस्था, अर्थात् समन्वय को विपक्षों का अभेद (Identity of opposites) कहा है।

पक्ष और विपक्ष के समन्वय के फलस्वरूप विकसित सामंजस्यपूर्ण अवस्था को 'निषेध का निषेध' (Negation of Negation) अथवा 'विरोध का विरोध' अर्थात् द्विधा-निषेध कहा जाता है। हेगलीय द्वन्द्वन्याय की यह एक मौलिक मान्यता है

Scanned with CamScanner

कि परिणाम और प्रक्रिया एवम् सिद्धन्त और व्यवहार दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

हेगल ने 'संभूति' का प्रयोग त्रयी के एक घटक या अंग के रूप में नहीं किया है। वस्तुतः संभूति विकास की उस प्रक्रिया का परिणाम है, जिसके अन्तर्गत पक्ष और विपक्ष परस्पर समन्वित होते हैं किन्तु हेगल इसे दैशिक और कालिक प्रक्रिया नहीं मानता है। यह एक तार्किक प्रक्रिया है, जो समस्त विकास पर आधार है। इस प्रकार प्रत्येक वस्तु में अंतर्निहित उसका विरोध तत्व ही सभी परिवर्तनों और क्रान्तियों का आधार है। इस संबंध में हेगल का यह कथन उल्लेखनीय है – 'विशुद्ध सत् विशुद्ध असत्य है' (Pure Being is Pure Nothing)।

इसी प्रकार द्वन्द्वात्मक पद्धति से प्रत्येक कोटि या ज्ञान की अवस्था दूसरी अवस्थाओं से तर्कतः निगमित होती है।